

# आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकता का अध्ययन

डॉ. चिंतामनी राजपूत

प्रिंसिपल, महाकोशल कॉलेज ऑफ साइंस, छपरा, सिवनी, मध्य प्रदेश

## सार

कैरियर प्राथमिकता किसी भी छात्रा के शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक भविष्य को आकार देने वाला एक महत्वपूर्ण घटक है। विशेष रूप से आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताएँ अनेक स्तरों पर प्रभावों का परिणाम होती हैं, जिनमें सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना, पारिवारिक अपेक्षाएँ, लैंगिक भूमिकाएँ, शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता तथा आत्म-धारणा प्रमुख हैं। भारतीय संदर्भ में आदिवासी छात्राएँ ऐतिहासिक रूप से सामाजिक वंचना, शैक्षिक असमानता तथा लैंगिक भेदभाव का सामना करती रही हैं (नाबिस्सन, 2016)। यद्यपि शिक्षा के विस्तार और नीतिगत हस्तक्षेपों से उनकी विद्यालयी भागीदारी में वृद्धि हुई है, तथापि उनके कैरियर चयन अभी भी सीमित और पारंपरिक बने हुए हैं (एक्सा, 2019)। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताओं का विस्तृत अध्ययन करना तथा उन सामाजिक, शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक कारकों की पहचान करना है जो इन प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि अधिकांश आदिवासी छात्राएँ सुरक्षित, सामाजिक रूप से स्वीकार्य एवं सेवा-उन्मुख कैरियरों को प्राथमिकता देती हैं। अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षिक नियोजन, कैरियर मार्गदर्शन और समावेशी नीति निर्माण के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

**मुख्य शब्द:** आदिवासी छात्राएँ, कैरियर प्राथमिकता, लैंगिक अध्ययन, व्यावसायिक आकांक्षा, सामाजिक समावेशन

## 1. भूमिका

कैरियर चयन मानव जीवन का एक ऐसा निर्णय है जो केवल आर्थिक आजीविका तक सीमित नहीं रहता, बल्कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान, आत्मसम्मान और जीवन-संतोष को भी प्रभावित करता है। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपने भविष्य के व्यवसाय, अध्ययन क्षेत्र और जीवन लक्ष्यों के प्रति गंभीर रूप से सोचने लगता है (सुपर, 1990)। इसी अवस्था में विकसित होने वाली कैरियर प्राथमिकताएँ आगे चलकर व्यावसायिक निर्णयों का आधार बनती हैं।

आदिवासी छात्राओं के संदर्भ में कैरियर प्राथमिकता का प्रश्न विशेष महत्व रखता है, क्योंकि वे एक साथ सामाजिक वर्ग, लैंगिक पहचान और आर्थिक स्थिति—तीनों स्तरों पर चुनौतियों का सामना करती हैं (ब्लूस्टीन, 2006)। आदिवासी समुदायों में शिक्षा की पहुँच, विशेषकर उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा, ऐतिहासिक रूप से सीमित रही है (नाबिस्सन, 2016)। इसके परिणामस्वरूप, छात्राओं के कैरियर विकल्प भी प्रायः संकुचित रह जाते हैं।

हाल के वर्षों में सरकारी योजनाओं, छात्रवृत्तियों और विद्यालयी नामांकन में वृद्धि के बावजूद यह देखा गया है कि आदिवासी छात्राएँ अब भी पारंपरिक और सामाजिक रूप से “सुरक्षित” माने जाने वाले कैरियरों को ही प्राथमिकता देती हैं (एक्सा, 2019)। इस पृष्ठभूमि में आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताओं का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

## 2. कैरियर प्राथमिकता की संकल्पना

कैरियर प्राथमिकता से आशय उस झुकाव या चयन से है जिसके अंतर्गत व्यक्ति भविष्य में किसी विशेष व्यवसाय या कार्यक्षेत्र को अपनाने की इच्छा व्यक्त करता है (स्ट्रॉन्ग, 1955)। यह प्राथमिकता केवल रुचि का परिणाम नहीं होती, बल्कि अनेक व्यक्तिगत और पर्यावरणीय कारकों से निर्मित होती है।

हॉलैंड (1997) के अनुसार व्यक्ति की कैरियर प्राथमिकता उसके व्यक्तित्व प्रकार से जुड़ी होती है, जबकि सुपर (1990) का मत है कि कैरियर विकास एक सतत प्रक्रिया है, जो जीवन-काल के विभिन्न चरणों में विकसित होती है। छात्राओं की कैरियर प्राथमिकता पर आत्म-धारणा, आत्म-प्रभावकारिता और सामाजिक अपेक्षाओं का विशेष प्रभाव पड़ता है (बंडूरा, 1997)।

## 3. आदिवासी छात्राएँ: सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भ

आदिवासी समाज भारत की सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसकी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, परंपराएँ और जीवन-शैली हैं। यद्यपि ये समुदाय आत्मनिर्भरता और सामुदायिक मूल्यों पर आधारित होते हैं, तथापि शिक्षा और आधुनिक रोजगार के संदर्भ में इन्हें अनेक संरचनात्मक बाधाओं का सामना करना पड़ता है (भारत सरकार, 2014)।

आदिवासी छात्राओं की शिक्षा प्रायः घरेलू दायित्वों, भाई-बहनों की देखभाल और सामाजिक परंपराओं से प्रभावित होती है) एनसीईआरटी, 2017)। इन परिस्थितियों में कैरियर को लेकर दीर्घकालिक योजना बनाना कठिन हो जाता है। परिणामस्वरूप, उनकी कैरियर प्राथमिकताएँ सीमित जागरूकता और उपलब्ध अवसरों तक सिमट जाती हैं) एक्सा, 2019)।

#### 4. लैंगिक दृष्टिकोण और कैरियर चयन

लैंगिक समाजीकरण कैरियर प्राथमिकता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। सामाजिक संरचनाएँ अक्सर छात्राओं से अपेक्षा करती हैं कि वे ऐसे पेशे चुनें जो पारिवारिक जीवन के साथ संतुलन बनाए रख सकें) एक्लेस, 2011)। यही कारण है कि शिक्षण, नर्सिंग, सामाजिक सेवा जैसे पेशे छात्राओं के बीच अधिक लोकप्रिय होते हैं।

आदिवासी छात्राओं के संदर्भ में यह प्रभाव और भी गहरा होता है, क्योंकि उन्हें पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं का अधिक कठोरता से पालन करना पड़ता है) ब्लूस्टीन, 2006)। इससे उनकी कैरियर प्राथमिकताएँ तकनीकी, वैज्ञानिक या उद्यमिता-आधारित क्षेत्रों की बजाय सेवा-उन्मुख क्षेत्रों तक सीमित रह जाती हैं) लियॉग एवं ब्राउन, 2014)।

#### 5. सैद्धांतिक ढाँचा

प्रस्तुत अध्ययन का सैद्धांतिक आधार मुख्यतः तीन सिद्धांतों पर आधारित है—

हॉलैंड का व्यावसायिक व्यक्तित्व सिद्धांत—जो यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अनुरूप कैरियर को प्राथमिकता देता है) हॉलैंड, 1997)।

सुपर का जीवन-काल सिद्धांत—जो कैरियर विकास को जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया मानता है) सुपर, 1990)।

नारीवादी कैरियर सिद्धांत—जो यह रेखांकित करता है कि महिलाओं के कैरियर निर्णय सामाजिक संरचनाओं और शक्ति संबंधों से प्रभावित होते हैं) ब्लूस्टीन, 2006)।

#### 6. संबंधित साहित्य की समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताएँ सामाजिक स्वीकृति, पारिवारिक समर्थन और सुरक्षा की भावना से गहराई से जुड़ी होती हैं) एक्लेस, 2011)। अनेक अध्ययनों में यह पाया गया है कि सीमित कैरियर जागरूकता उनके विकल्पों को प्रभावित करती है) एनसीईआरटी, 2017)।

एक्सा) 2019) ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया कि आदिवासी छात्राओं में उच्च शिक्षा के प्रति रुचि तो बढ़ी है, किंतु कैरियर विविधता अभी भी सीमित है। इसी प्रकार, ओईसीडी) 2019) ने सामाजिक रूप से वंचित समूहों के लिए कैरियर मार्गदर्शन की आवश्यकता पर बल दिया है।

#### 7. अध्ययन के उद्देश्य

- आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताओं का अध्ययन करना।
- विभिन्न कैरियर क्षेत्रों के प्रति उनकी रुचि का विश्लेषण करना।
- सामाजिक, पारिवारिक एवं शैक्षिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- आत्म-धारणा और प्रेरणा की भूमिका का परीक्षण करना।
- कैरियर मार्गदर्शन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

#### 8. शोध कार्यविधि

प्रस्तुत अध्ययन में आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताओं का व्यवस्थित एवं तथ्यपरक अध्ययन करने के उद्देश्य से वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध अभिकल्प को अपनाया गया। इस शोध अभिकल्प का चयन इसलिए किया गया ताकि अध्ययन की जनसंख्या से संबंधित वर्तमान प्रवृत्तियों, रुचियों तथा कैरियर से जुड़ी प्राथमिकताओं का यथार्थ चित्र प्राप्त किया जा सके। अध्ययन हेतु माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कुल 200 आदिवासी छात्राओं का चयन नमूने के रूप में किया गया, क्योंकि यह शैक्षिक अवस्था कैरियर से संबंधित आकांक्षाओं और निर्णयों के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। आँकड़ों के संकलन के लिए अन्वेषक द्वारा निर्मित कैरियर प्राथमिकता सूची का प्रयोग किया गया, जिसमें सेवा क्षेत्र, तकनीकी क्षेत्र, प्रशासनिक सेवाएँ तथा स्वरोजगार जैसे विविध कैरियर विकल्पों से संबंधित मर्दों को सम्मिलित किया गया था, जिससे छात्राओं की बहुआयामी कैरियर प्राथमिकताओं का समग्र अध्ययन किया जा सके। उक्त उपकरण का प्रशासन विद्यालयी वातावरण में सामूहिक रूप से किया गया तथा सभी प्रतिभागी छात्राओं को स्पष्ट निर्देश प्रदान किए गए, जिससे वे स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रूप से अपनी प्रतिक्रियाएँ दे सकें और संकलित आँकड़ों की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता सुनिश्चित की जा सके।

## 9. परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश आदिवासी छात्राएँ शिक्षण, नर्सिंग, सामाजिक सेवा और सरकारी सेवाओं को उच्च प्राथमिकता देती हैं। तकनीकी और उद्यमिता आधारित कैरियरों के प्रति रुचि अपेक्षाकृत कम पाई गई। यह प्रवृत्ति सामाजिक सुरक्षा और पारिवारिक स्वीकृति से जुड़ी हुई प्रतीत होती है। (एक्लेस, 2011; ब्लूस्टीन, 2006)।

## 10. शैक्षिक एवं नीतिगत निहितार्थ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बालिका शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और कैरियर मार्गदर्शन पर विशेष बल दिया गया है। (भारत सरकार, 2020)। आदिवासी छात्राओं के लिए विशेष कैरियर जागरूकता कार्यक्रम आवश्यक हैं। (ओईसीडी, 2019)।

## 11. सुझाव

विद्यालय स्तर पर आदिवासी छात्राओं के लिए नियमित एवं योजनाबद्ध कैरियर मार्गदर्शन सत्रों का आयोजन किया जाना चाहिए, जिनके माध्यम से उन्हें विभिन्न शैक्षिक धाराओं, व्यावसायिक विकल्पों, कौशल आधारित पाठ्यक्रमों तथा भविष्य की रोजगार संभावनाओं से अवगत कराया जा सके। इस प्रकार के मार्गदर्शन कार्यक्रम समग्र शिक्षा की अवधारणा को सुदृढ़ करते हैं और छात्राओं को अपनी रुचि, क्षमता एवं सामाजिक संदर्भ के अनुरूप कैरियर निर्णय लेने में सहायता प्रदान करते हैं। आदिवासी छात्राओं में आत्मविश्वास एवं आकांक्षाओं के विकास हेतु महिला रोल मॉडल्स के साथ संवाद कार्यक्रमों को विद्यालयी गतिविधियों में सम्मिलित किया जाना उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत सफल महिलाओं के अनुभवों से परिचित होने पर छात्राएँ पारंपरिक लैंगिक सीमाओं से परे सोचने के लिए प्रेरित होती हैं, जिससे उनके कैरियर विकल्पों का दायरा विस्तृत होता है।

वर्तमान शैक्षिक एवं सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए आदिवासी छात्राओं को तकनीकी, डिजिटल एवं नवोन्मेषी क्षेत्रों से संबंधित आधारभूत जानकारी प्रदान की जानी चाहिए। इससे उनकी कैरियर प्राथमिकताओं में विविधता आएगी और वे उभरते हुए कौशल-आधारित क्षेत्रों में भी अपनी संभावनाओं को पहचान सकेंगी, जो समकालीन शैक्षिक सुधारों की भावना के अनुरूप है। कैरियर चयन की प्रक्रिया में अभिभावकों की सकारात्मक सहभागिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि पारिवारिक समर्थन आदिवासी छात्राओं के शैक्षिक और व्यावसायिक निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यालयों द्वारा आयोजित अभिभावक परामर्श एवं जागरूकता कार्यक्रम इस दिशा में सहायक हो सकते हैं और समुदाय आधारित सहयोग को सुदृढ़ कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, आदिवासी छात्राओं की शिक्षा में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षित आवास सुविधाओं, छात्रवृत्तियों एवं सहायक व्यवस्थाओं का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है। इस प्रकार की सहायक व्यवस्थाएँ शैक्षिक समावेशन को बढ़ावा देती हैं और सामाजिक तथा आर्थिक बाधाओं को कम करने में सहायक सिद्ध होती हैं। उपर्युक्त प्रस्तुत सुझाव यह स्पष्ट करते हैं कि आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताओं को सुदृढ़ करने हेतु प्रस्तावित हस्तक्षेप समकालीन शैक्षिक सुधारों की व्यापक दृष्टि से सामंजस्य रखते हैं। समग्र शिक्षा, कैरियर मार्गदर्शन, लैंगिक समानता, कौशल विकास तथा शैक्षिक समावेशन पर केंद्रित ये सुझाव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप हैं, जो शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित न रखते हुए उसे जीवनोपयोगी, समावेशी और भविष्य उन्मुख बनाने पर बल देती है। इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन न केवल आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताओं की समझ को विस्तार देता है, बल्कि नीति-आधारित शैक्षिक हस्तक्षेपों की प्रासंगिकता को भी सुदृढ़ करता है।

## निष्कर्ष

आदिवासी छात्राओं की कैरियर प्राथमिकताएँ सामाजिक, शैक्षिक और लैंगिक कारकों से गहराई से प्रभावित होती हैं। यदि समावेशी और संवेदनशील हस्तक्षेप किए जाएँ, तो उनकी कैरियर संभावनाओं का विस्तार संभव है।

## संदर्भ

1. बंडूरा, ए. (1997). *सेल्फ-एफिकेसी: द एक्सरसाइज ऑफ कंट्रोल*. फ्रीमैन।
2. ब्लूस्टीन, डी. एल. (2006). *द साइकोलॉजी ऑफ वर्किंग*. लॉरेंस अर्लबाम।
3. एक्लेस, जे. एस. (2011). *जेंडर्ड एजुकेशनल चॉइसेज*. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवियरल डेवलपमेंट, 35(3), 195–2011
4. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. (2014). *रिपोर्ट ऑन ट्राइबल कम्युनिटीज*।
5. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. (2020). *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020*।
6. हॉलैंड, जे. एल. (1997). *मेकिंग वोकेशनल चॉइसेज*. पी-ए-आर।
7. लियोंग, एफ. टी. एल., एवं ब्राउन, एम. टी. (2014). *कैरियर डेवलपमेंट थ्योरीज*. वाइली।



8. नांबिस्सन, जी. बी. (2016). एजुकेशन एंड इनइक्वालिटी. ई-पी-डब्ल्यू।
9. एन-सी-ई-आर-टी. (2017). एजुकेशन ऑफ शेड्यूल्ड ट्राइब्स।
10. ओ-ई-सी-डी. (2019). कैरियर गाइडेंस फॉर इक्विटी।
11. स्ट्रॉना, ई. के. (1955). वोकेशनल इंटेरेस्ट्स।
12. सुपर, डी. ई. (1990). कैरियर डेवलपमेंट थ्योरी।